ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 25, अंक 235 मई 2023

नमो बुद्धाय

संपादक - डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 25 अंक 235
मई 2023

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ.बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	Maritime History : A History from below	Saurabh Mishra Research Scholar	04
3.	भारत में आदिवासी महिला शिक्षा विकास की नीतियां एवं उसके प्रभाव	डॉ. देवीप्रसाद सिंह(सहा. प्राध्यापक) अनुज कुमार पाण्डेय (शोधार्थी)	09
4.	Tribal Panchayat System in Telangana State- An Overview	Dr. Basani Lavanya	12
5.	भारतीय शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहनलाल आर्य	17
6.	पेरियार ई.वी. रामासामी का एक तमिल, राष्ट्रवादी और समाज सुधारक के रुप में विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन	अनुराधा गुंजन त्रिपाठी	21
7.	दलित संदर्भ और 'क्रौच हूँ मैं'	डॉ. दिलीप मेहरा	24

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेगा।

Conclusion

Telangana Government has created Thanda/Gudem Gram Panchayats under 2018 panchayat act Telangana henceforth new Gram Panchayats are providing self rule among the tribal communities all over the state. Empowerment of Gram Sabhas would require efforts at mobilization of the village community to ensure mass participation in meetings of the Gram Sabha. Further, a massive awareness generation programme needs to be taken up to inform Gram Sabhas about their rights in respect of planning, implementation and audit of development programmes with respect to control over natural resources, land records and conflict resolution has to be taken up on a massive scale.

- Dr. BASANI LAVANYA
Post-Doctoral Fellow Department of Political Science
Kakatiya University, Warangal, Telangana-506005
Mob. 9160975164

References :

1. https://factsanddetails.com/india/Minorities_Castes_and_Regions_in_India/sub7_4h/entry-4216.html retrieved dated 29-6-2022.
2. https://tribal.nic.in/repository/ViewDoc.aspx?RepositoryNo=TRI28-08-2017121847&file=Docs/TRI28-08-2017121847.pdf. Retrieved date 12.9.2022.
3. http://kbk.nic.in/tribalprofile/Gond.pdf Retrieved date 12.9.2022.
4. http://www.iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol.%2021%20Issue5/Version 5/H2105054850.pdf. Retri

भारतीय शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

– डॉ. मोहनलाल आर्य

सार :

वैदिक शिक्षा प्रणाली आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली की नींव का पत्थर है । उसी के आधार पर आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ है। वैदिक शिक्षा प्रणाली हमारी संस्कृति पर आधारित थी और संस्कृति से हम अलग हो नहीं सकते है। उसके ग्रहणीय तत्वों को ही उसके गुण मानते हैं और त्याज्य तत्वों को दोष। उसके ग्रहणीय तत्वों में मुख्य हैं– निःशुल्क शिक्षा, शिक्षा के व्यापक उद्देश्य, व्यापक पाठ्यचर्या, गुरू–शिष्यों के बीच सम्बन्ध और शिक्षण संस्थाओं की संस्कार प्रधान पद्धति। बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली अपने समय की संसार की सबसे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली थी परन्तु आज के भारतीय समाज के स्वरूप एवं उसकी भविष्य की आकांक्षाओं की दृष्टि से उसके

कुछ तत्व ग्रहणीय हैं। बौद्ध काल में एक नई शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ जिसे बौद्ध शिक्षा प्रणाली कहते हैं । यदि उसने कुछ अनुकरणीय पद चिन्ह अवश्य छोड़े है बस उन्हीं को हम आधुनिक भारतीय शिक्षा के विकास में उसका योगदान मान सकते है। मध्य काल में मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ जिसे मुस्लिम शिक्षा प्रणाली कहते हैं। मुस्लिम शिक्षा प्रणाली इसलिए कि यह मुस्लिम धर्म और संस्कृति पर आधारित थी। आज देश की शिक्षा व्यवस्था में राज्य और समाज का सहयोग, निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था, योग्य एवं निर्धन विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था और समस्त ज्ञान विज्ञान की उच्च शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है ।

मुख्य शब्दावली :

वैदिक काल, बौद्ध काल, मुस्लिम काल, शिक्षा व्यवस्था ।

प्रस्तावना :—

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविधताओं के कारण भारतीय सभ्यता संसार की एक प्राचीनतम सभ्यता है। यहाँ की संस्कृति और सभ्यता का गौरवपूर्ण इतिहास वैदिक ग्रन्थों में है। यह सम्पदा कितनी पुरानी है यह कहना कठिन है, वेदों ने ही सम्पूर्ण धरती को मानव सभ्यता और ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया है, न केवल भारत अपितु विश्व की समस्त मानव जाति के लिए हमारा यह सांस्कृतिक धन एक आकर्षण का विषय बना है। वेदों का चिन्तन एवं मनन मोक्षमार्गीय है। वेद सभी को 'जिओ और जीने दो' का उपदेश देते है । भारतीय वेद संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। वेदों की रचना कब और किस विद्वान ने की इस पर भी सभी विद्वान एक मत नही हैं। जर्मन विद्वान मैक्समूलर एक ऐसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने सबसे पहले आकर इस विषय पर शोध कार्य किया उनके अनुसार सबसे पहला और प्राचीनतम वेद ऋग्वेद है और इसकी रचना 1200 ई. पू. में हुई थी। हमारे देश में संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था वेदों की संस्कृत भाषा इतनी समृद्ध एवं परिमार्जित थी। उनकी विषय – सामग्री इतनी विविध, विस्तृत एवं उच्च कोटि की है कि उस समय इनके विकास में काफी समय अवश्य लगा होगा। वैदिक काल में लगभग 5 वर्ष की आयु पर किसी शुभ दिन बच्चे का विद्यालय संस्कार किया जाता था। यह संस्कार परिवार के कुल पुरोहित द्वारा कराया जाता था। 12 वर्ष की आयु पर बच्चों का गुरूकुलों में प्रवेश होता था जिसमें ब्राह्मण बच्चों का 8 वर्ष की आयु पर, क्षत्रिय बच्चों का 10 वर्ष की आयु पर और वैश्य बच्चों का 12 वर्ष की आयु पर। गुरूकुलों में प्रवेश के समय बच्चों का उपनयन संस्कार होता था। इस संस्कार के बाद उनकी शिक्षा प्रारम्भ होती थी। वैदिक काल में शिक्षा की पाठ्यचर्या को दो स्तरों में विभाजित किया गया था प्रारम्भिक और उच्च। वैदिक काल में प्रारम्भिक स्तर की पाठ्यचर्या में भाषा, व्याकरण, छनदशास्त्र और गणना का सामान्य ज्ञान और सामाजिक व्यवहार एवं धार्मिक क्रियाओं के प्रशिक्षण को स्थान प्राप्त था। वहीं उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या के अन्तर्गत संस्कृत भाषा और उसके व्याकरण तथा धर्म एवं नीतिशास्त्र की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थी । वैदिक काल में शिक्षण सामान्यतः मौखिक रूप में होता था और प्रायः प्रश्नोत्तर, शंका–समाधान, व्याख्यान और वाद–विवाद द्वारा होता था। अतः इस काल में निम्नलिखित शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था – 1. अनुकरण विधि, 2. व्याख्यान एवं दृष्टान्त विधि, 3. प्रश्नोत्तर, वाद–विवाद और शास्त्रार्थ विधि, 4. कथन, प्रदर्शन एवं अभ्यास विधि, 5. श्रवण, मनन, निदिध्यासन विधि, 6. तर्क विधि और 7. कहानी विधि। वैदिक काल में अति विद्वान, स्वाध्यायी, धर्मपरायण और सचरित्र व्यक्ति ही गुरू हो सकते थे। उस समय इन्हें समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। गुरूओं को धियावसु (जिनकी बुद्धि ही धन

हो), सत्यजन्मा (सत्य को जानने वाला) और विश्ववेदा (सर्वज्ञ) आदि विशेषताओं से सम्बोधित किया जाता था। ये अपने गुरूकुलों के पूर्ण स्वामी होते थे, परन्तु पूर्ण स्वामित्व के साथ पूर्ण उत्तरदायित्व जुडा था। गुरू अपने गुरूकुलों की सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होते थे। गुरू अपने शिष्यों के आवास, भोजन एवं वस्त्रादि की व्यवस्था करते थे, उनके स्वास्थ्य की देखभाल करते थे और उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्न करते थे।

यूरोपीय एवं पश्चिमी देशों से आये आर्यों ने नीग्रो व द्रविडों के साथ धोखा करके उनकी सभ्यता व संस्कृति को न केवल नष्ट किया बल्कि उन्हें अपना दास बना लिया था। कर्म आधारित व्यवस्था को परिवर्तित कर जन्म आधारित व्यवस्था भारत में फलीभूत होने लगी। उसके बाद ई.पू. 563 में भारत की इस पुण्य भूमि पर महात्मा बुद्ध का अवतरण हुआ। यूँ तो उनका जन्म राजघराने में हुआ था और उन्हें सभी सुख–सुविधाऐं उपलब्ध थीं परन्तु उन्होंने लोंगों के सांसारिक दुःखों की अनुभूति की। उन्होनें इन दुःखों से छुटकारा पाने के उपाय खोजने के लिए तपस्या की और कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म के स्थान पर कर्मणा प्रधान मानवतावादी बौद्ध धर्म की स्थापना की। महात्मा बुद्ध ने अपना यह धम्मपदेश सर्वप्रथम सारनाथ नामक स्थान पर दिया था। देश के विभिन्न भागों में बौद्ध मठों और विहारों का निर्माण हो गया था। बौद्ध काल में प्रारम्भिक शिक्षा के द्वार सभी वर्गो के लिए खुलने पर समाज के वंचित वर्ग अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने को लालायित दिखे क्योंकि वैदिक कालीन व्यवस्था में शिक्षा सभी वर्गों के लिए नहीं थी। बौद्ध काल में शिक्षा व्यवस्था बौद्ध मठों एवं विहारों में दी जाती थी। यह 6 वर्ष की आयु से 12 वर्ष की आयु तक चलती थी। प्रवेश के समय बच्चों का पबज्जा संस्कार होता था। बौद्ध ग्रन्थ महाबग्ग में इस विधि का विस्तार से वर्णन मिलता है। बौद्ध काल में उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु एक प्रवेश परीक्षा होती थी और योग्य छात्रों को उच्च शिक्षा में प्रवेश दिया जाता था। यह शिक्षा सामान्यतः 12 वर्ष की आयु पर शुरू होती थी और 20–25 वर्ष की आयु तक चलती थी। बौद्ध काल में जिस बौद्ध शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ उसके उद्देश्य एवं आदर्श अति व्यापक थे। यूँ तो ये सामान्यतः वही थे जो वैदिक शिक्षा प्रणाली के थे परन्तु इनमें कुछ भिन्नता थी। यहाँ उन सभी को आज की शिक्षा व्यवस्था में निम्नलिखित रूप में प्रयुक्त करते है–मानव संस्कृति का संरक्षण एवं विकास, सामाजिक आचरण की शिक्षा, ज्ञान का विकास, चरित्र निर्माण एवं बौद्ध धर्म की शिक्षा। बौद्ध कालीन शिक्षा की व्यवस्था बौद्ध मठों एवं विहारों में होती थी चूँकि उस समय बौद्ध शिक्षा, बौद्ध संघों के नियन्त्रण में थी बौद्ध शिक्षा की पाठ्यचर्या को हम दो आधारों पर देख सकते है। एक उसके स्तरों (प्राथमिक, उच्च और भिक्षु) के आधार पर और दूसरे उसकी प्रकृति (लौकिक एवं आध्यात्मिक) के आधार पर। इस काल में बौद्ध भिक्षुओं ने मुख्य ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार कर दी थीं। उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों को पाली भाषा में अनुवाद भी कर दिये थे और इन सबकों पुस्तकालय में सुरक्षित रखा था। अतः मुख्य रूप से इस काल में निम्नलिखित शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था – 1. प्रश्नोत्तर विधि, 2. अनुकरण विधि, 3. व्याख्या विधि, 4. वाद– विवाद एवं तर्क विधियाँ, 5. व्याख्यान विधि, 6. सम्मेलन एवं शास्त्रार्थ, 7. प्रदर्शन एवं अभ्यास विधि और 8. देशाटन। बौद्ध काल में बौद्ध भिक्षु ही शिक्षण कार्य करते थे और जो बौद्ध भिक्षु शिक्षण कार्य किया करते थे उन्हें उपाझयाय (उपाध्याय) कहा जाता था। इस काल में उपाध्याय अति विद्वान, आत्मसंयमी और चरित्रवान होते थे। भिक्षु बौद्ध उपाध्याय अपने शिष्यों (श्रमणों) के आवास एवं भोजन की व्यवस्था करते थे, उनका ज्ञानपर्द्धन करते थे । वही शिक्षार्थी को श्रमण अथवा सामनेर कहा जाता था। ये बौद्ध मठों एवं विहारों के नियमों का कठोरता से पालन करते थे। इन्हें मूल रूप

से दस आदेशों का पालन करना होता था – 1. अहिंसा का पालन करना, 2. निन्दा न करना, 3. सत् आहार लेना, 4. सत्य बोलना, 5. मादक पदार्थों का सेवन न करना, 6. पराई वस्तु ग्रहण न करना, 7. श्रृंगार की वस्तुओं का प्रयोग न करना, 8. सोना, चाँदी, हीरा, जवाहरात आदि कीमती दान न लेना, 9. शुद्ध आचरण करना और 10. नृत्य एवं संगीत आदि से दूर रहना ।

हमारे देश में प्राचीन काल, मध्य काल के आक्रमणकारियों में सर्वप्रथम नाम परसिया के राजा साइरस (538 ई.पू. – 530 ई.) का आता है। इसके बाद मैसोडोनिया के राजा सिकन्दर ने 327 ई.पू. में आक्रमण किया था। सन् 1192 में उसने 11वीं बार आक्रमण किया और सीमावर्ती राज्यों को रौंदता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा। दिल्ली के तत्कालीन हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान से उसका तराइन के मैदान में निर्णायक युद्ध हुआ। वह स्वंय तो यहां से लूट का भारी माल लेकर अपने देश लौट गया परन्तु अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को दिल्ली का शासक बना कर चला गया और फिर यहीं से भारत में मुस्लिम शासन की शुरूआत हुई। मध्यकालीन में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था मुख्य रूप से मकतबों और उच्च शिक्षा की शिक्षा मदरसों में होती थी। इसके अतिरिक्त खानकाहें, दरगाहों, कुरान स्कूल, फारसी स्कूल, फारसी–कुरान और अरबी स्कूलों की व्यवस्था भी थी। मध्यकाल का सर्वप्रमुख उद्देश्य एक आदर्श इस्लाम धर्म एवं संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार करना था। इसके साथ–साथ इसमें ज्ञान के विकास, कला–कौशल के प्रशिक्षण और सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति पर भी बल दिया गया था । मुस्लिम शिक्षा के इन सब उद्देश्यों एवं आदर्श को हम आज की शिक्षा व्यवस्था में निम्नलिखित रूप में प्रयुक्त करते है – 1. इस्लाम संस्कृति का प्रसार एवं प्रचार, 2 नैतिक एवं चारित्रिक विकास, 3. ज्ञान का विकास, 4. शासन के प्रति बफादारी, 5. कला–कौशलों एवं व्यवसायों की शिक्षा और 6. सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति । मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा दो स्तरों में विभाजित थी– प्राथमिक और उच्च। प्राथमिक स्तर पर सभी विषय अनिवार्य रूप से पढाये जाते थे इसके अन्तर्गत लिपि ज्ञान, कुरान शरीफ का 30वां भाग, लिखना, पढना, अंकगणित, पत्र लेखन, बातचीत और अर्जीनवीसी पढाई–लिखाई और उच्च स्तर पर अरबी एवं फारसी के अतिरिक्त अन्य विषय वैकल्पिक रूप से पढाये जाते थे इसके अन्तर्गत लौकिक और धार्मिक दो प्रकार का पाठ्यक्रम होता था। मध्यकालीन शिक्षा में इस्लाम धर्म को मानने वाले, अरबी और फारसी के विद्वान अपने विषय के अच्छे जानकार व्यक्ति ही शिक्षक पद पर नियुक्त किए जाते थे। वही शिक्षार्थियों को मकतब तथा मदरसों में शिक्षकों को कठोर अनुशासन में रहना होता था, उन्हें किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं थी, पर मध्य काल में वे वैदिक एवं बौद्ध काल की तरह कठोर जीवन नहीं जीते थे, आरामदायक जीवन जीते थे। छात्रावासों में कालीनों पर सोते थे और भोजन स्वादिष्ट होता था ।

प्राचीन कालीन शिक्षा के उद्देश्य :

1. वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन, मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के मुख्य अभिलक्षण को जान सकेगें ।

2. वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन, मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं संगठन का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें ।

3. वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन, मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, अनुशासन आदि को समझ सकेगें।

4. वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन, मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के प्रशासन एवं वित के सम्बन्ध में समझ सकेगें ।

5. वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन, मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के मुख्य शिक्षा केन्दों के बारे में जान सकेगें ।

निष्कर्ष :

अतः कहा जा सकता है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली की नींव का पत्थर है। उसी के आधार पर आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ है। वैदिक शिक्षा प्रणाली हमारी संस्कृति पर आधारित थी और संस्कृति से हम अलग हो नहीं सकते है । उसके कुछ तत्व ग्रहणीय है और कुछ तत्व त्याज्य हैं। उसके ग्रहणीय तत्वों को ही उसके गुण मानते हैं और त्याज्य तत्वों को दोष । उसके ग्रहणीय तत्वों में मुख्य है – निःशुल्क शिक्षा, शिक्षा के व्यापक उद्देश्य, व्यापक पाठ्यचर्या, गुरू–शिष्यों के बीच सम्बन्ध और शिक्षण संस्थाओं की संस्कार प्रधान पद्धति। बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली अपने समय की संसार की सबसे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली थी परन्तु आज के भारतीय समाज के स्वरूप एवं उसकी भविष्य की आकांक्षाओं की दृष्टि से उसके कुछ तत्व ग्रहणीय हैं। बौद्ध काल में एक नई शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ जो बौद्ध शिक्षा प्रणाली कही गयी। यह अपने कुछ अनुकरणीय पद चिन्ह अवश्य छोड़ गई है बस उन्हीं को हम आधुनिक भारतीय शिक्षा के विकास में उसका योगदान मानते है । मध्य काल में मुस्लिम शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। यह मुस्लिम धर्म और संस्कृति पर आधारित थी। हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विकास में मुस्लिम शिक्षा प्रणाली का भी काफी योगदान है। आज सम्पूर्ण देश में जो मकतब और मदरसे दिखाई दे रहे है, वे मुस्लिम शिक्षा प्रणाली के अवशेष हैं। आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में जो कुछ महत्वपूर्ण तथ्य हमें देखने को मिल रहे हैं जैसे– शिक्षा की व्यवस्था में राज्य और समाज का सहयोग, निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था, योग्य एवं निर्धन छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था और समस्त ज्ञान

– डॉ. मोहन लाल 'आर्य'
आचार्य–शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)
मोबा. 9412143884

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. 'आर्य', डॉ. मोहनलाल (2017) शिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, मेरठ : आर. लाल. बुक डिपो ।
2. 'आर्य', डॉ. मोहनलाल (2018) शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य, मेरठः आर. लाल. बुक डिपो ।
3. मैरी, डॉ. शीलू (2008) शिक्षक के सामाजिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, नई दिल्लीः रजत प्रकाशन ।
4. शुक्ला, डॉ. सी. एम. (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ : इंटरनेशल पब्लिशिंग हाऊस।
5. वालिया, डॉ. जे. एस. (2009) भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, मेरठरू अहमपाल पब्लिशर्स ।
6. लाल, डॉ. रमन बिहारी (2009) भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, मेरठ : राज प्रिन्टर्स।

पेरियार ई.वी. रामासामी का एक तमिल राष्ट्रवादी और समाज सुधारक के रूप में विश्लेषणात्क और आलोचनात्मक अध्ययन

– अनुराधा **– गुंजन त्रिपाठी**

सार – ई.वी. रामासामी द्रविड आन्दोलन की राजनीति के बड़े नायकों में से एक थे। पेरियार ने ताउम्र हिन्दू धर्म और ब्राहमणवाद का जमकर विरोध किया। उन्होंने तर्कवाद, आत्म–सम्मान और महिला समानता एवं अधिकार जैसे मुद्दों पर जोर दिया। पेरियार ने जातिप्रथा का घोर विरोध किया लेकिन पेरियार ने कुछ ऐसी बातें कहीं जिनको लेकर अक्सर विवाद भी होता रहा। सच्ची रामायण भी पेरियार की काफी विवादित कृति रही है। ऐसे में पेरियार को लेकर भी किसी निष्कर्ष तक पहुँचने से पहले धारणा बनाने से पहले उन्हें और पढे जाने की जरूरत है ।

की–वर्डस–हिन्दू धर्म, तर्कवाद, अंधविश्वास, आत्मसम्मान, वैकोम आन्दोलन, जातिप्रथा आदि ।

पेरियार ई.वी. रामासामी भारतीय राजनीति की